रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

# इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया
(भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा आदेश प्राप्त
एक मात्र संगठन)
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक इसके स्वयं सदस्य बनें
एवं सदस्यता हेतु अभियान चलायें।

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 46 ● अंक – 22 ● कानपुर 16 से 30 नवम्बर 2024 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

# इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक

# अभी करें और प्रतीक्षा सरकार और समय ले सकती है

## सरकार माँग सकती है आपके द्वारा प्रतिपदित कार्यों का ब्योरा

# रोगियों का रिकार्ड रखना है आवश्यक

एक युग था जब सम्पूर्ण विश्व में आयुर्वेद का बोल–बाला था और सभी प्राणी आयुर्वेद की औषधियों का लाभ लेते थे, धीरे–धीरे जागरुकता बढ़ी, लोगों के ज्ञान में वृद्धि हुयी, लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य करने प्रारम्भ किये परिणामों स्वरुप कुछ नई पद्धतियों ने जन्म भी लिया इसमें यूनानी और एलोपैथी प्रमुःख रुप से आगे आयीं, प्रारम्भ में इन दोनों पद्धतियों के क्षेत्र सीमित थे धीरे–धीरे एलोपैथी का प्रभाव बढ़ने लगा विश्व के जिन–जिन क्षेत्रों में अंग्रेज़ों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया वहां पर अपनी शिक्षा प्रणाली एवं एलोपैथी चिकित्सा पद्धति का व्यापक प्रचार व प्रसार किया।

अट्ठारहवीं शताब्दी में कई पद्धतियों और थेरेपियों ने जन्म लिया इनमें होम्योपैथी, इलेक्ट्रो होम्योपैथी व एक्युपंक्चर अपना प्रभाव डालने में काफ़ी हद तक सफल रहीं, होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आगमन जर्मनी में हुआ, एक्युपंक्चर चीनी चिकित्सा पद्धति है, पर धीरे–धीरे इनका प्रसार विश्व के काफ़ी बड़े क्षेत्र में हो गया, भारत वर्ष में भी इन पद्धतियों ने अपने पैर जमाये और लोगों में अपना विश्वास अर्जित किया परन्तु अंग्रज़ों के एकाधिकार होने के कारण अन्य किसी पद्धति ने उतना विकास नहीं किया जितना एलोपैथी ने किया, इसका एकमात्र कारण यह था कि अंग्रज़ों ने अपने साम्राराज्य में अन्य पद्धतियों को विकसित ही नहीं होने दिया और न ही शोध कार्य में सहयोग किया, उन्होंने यह भी प्रयास किया कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक एन–केन–प्रकारेण एलोपैथी का प्रयोग करें।

परिणामतः अन्य चिकित्सा पद्धतियों का क्षरण व एलोपैथी का विकास होता गया तभी स्वास्थ्य के लिये एक विश्व स्तरीय संगठन का गठन किया गया जिसका नाम विश्व स्वास्थ्य संगठन दिया गया, जिसे हम ("हू" WHO) के नाम से भी जानते हैं, आज यह विश्व का सबसे बड़ा स्वास्थ्य संगठन है और विश्व के लगभग सभी देश इस संगठन के सदस्य हैं, वर्तमान में इस संगठन का मुख्यालय जेनेवा में है, इस संगठन से जुड़े सभी सदस्य इसकी नीतियों का अनुपालन करते हैं और समय–समय पर होने वाली बैठकों में सम्मिलित भी होते हैं और नवीनतम जानकारियों से एक दूसरे को परिचित कराते हैं और स्वंय भी परिचित होते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के पास बहुत बड़ा कोष भी है उस कोष का उपयोग विश्व के उन देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये किया जाता है जहां गरीबी और अशिक्षा है, आज देश दो तरह के हैं एक विकसित और दूसरा विकासशील, जो देश विकसित हैं उनके पास सभी संसाधन उपलब्ध हैं और जो विकासशील हैं वे देश या तो संसाधन जुटाते हैं या फिर विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से सहायता प्राप्त करते हैं, आज जब पूरे विश्व में एलोपैथी का बोल–बाला है ऐसे में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी चिकित्सा पद्धतियों के उन्नयन की रुप रेखा बनायी है जो पारम्परिक हैं ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का नाम दिया गया है।

### स्वास्थ्य के मामले में विश्व स्वास्थ्य संगठन सबका प्रमुख
### पूरा विश्व मानता है इसकी बात
### इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये भी निर्देश
### इलेक्ट्रो होम्योपैथी की
### किसी भी पद्धति से प्रतिस्पर्धा नहीं

भारत वर्ष में पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्धा, योगा, नेचुरोपैथी व सोवा–रिग्पा आदि हैं, जबकि होम्योपैथी एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धतियां वैकल्पिक श्रेणी में आती है, चूँकि भारत वर्ष में चिकित्सा पद्धतियों की शासकीय मान्यता की व्यवस्था है, इस देश में वही चिकित्सक अधिकृत माना जाता है जो मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आता है, वैसे तो भारत में कुछ अन्य पद्धतियां व थेरेपियां भी उपयोग में लायी जाती हैं जैसे टच थेरेपी, स्टोन थेरेपी, बैच फलावर थेरेपी आदि परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी अधिकारिक चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में आती है, इस अधिकारिक चिकित्सा पद्धति को मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की श्रेणी में लाने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है विश्व स्वास्थ्य संगठन के एजेण्डे में शामिल हर देश अपने यहां प्रचलित होने वाली चिकित्सा पद्धतियों का विकास करे और जिस राष्ट्र में जो कानून हो उस कानून के आधार पर उन पद्धतियों को भी संरक्षण प्रदान किया जाये, जो जनता के स्वास्थ्य लाभ में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहे हैं, भारत सरकार विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के एजेण्डे पर ही कार्य कर रही है, भारत सरकार द्वारा जारी 28 फरवरी, 2017 का पत्र उसी की एक बानगी है।

चीन के बाद विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाला देश भारत है जहां लगभग एक सौ पच्चीस करोड़ से भी अधिक भारतीय निवास करते हैं, इस देश में जन स्वास्थ्य के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रायोजित बहुत सारे कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, पोलियो, टीकाकरण आदि इसी अभियान का एक हिस्सा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी भारत वर्ष में पिछले करीब डेढ़ सौ वर्षों से कार्य कर रही है लगभग पच्चीस लाख से अधिक चिकित्सक पूरे देश में इस चिकित्सा पद्धति से जनता की सेवा कर रहे हैं सरकार को और WHO विश्व स्वास्थ्य संगठन को इस बात की पूरी जानकारी भी है, तभी तो विश्व स्वास्थ्य संगठन के एजेण्डे पर कार्य करते हुये भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नियमितिकरण करने का पूरा मन बना लिया है।

भारत सरकार ने सभी लोगों से एक प्रपोज़ल के रुप में कुछ जानकारियां प्राप्त करनी चाही थी उसके पीछे एकमात्र लक्ष्य यही था कि सरकार के पास जो डाटा उपलब्ध है उनकी सत्यता कितनी एवं क्या है ? सरकार यह भी जानना चाहती है कि विभिन्न संस्था संचालकों के द्वारा जो यह दावा किया जा रहा है कि पच्चीस लाख से अधिक चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं उसमें कितना दम है ! वैसे सरकारी आंकड़े सिर्फ पचास हज़ार की संख्या तक सीमित हैं, आने वाला समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये हितकारी होगा और भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को वही सम्मान मिलेगा जो अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त है।

देश में संचालित इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सभी शीर्ष संस्थायें इस सम्बंध में आँकड़े उपलब्ध करायें।

# सन्नाटा टूटना चाहिये

*पिछले कुछ महीनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन में एक अजीब सी शान्ति है जितने भी आन्दोलनकारी थे वह समाज में तो दिख रहे हैं परन्तु उनकी गतिविधियां ठप्प सी दिख रही हैं, कुछ समय पूर्व जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते थे पता नहीं उनकी सक्रियता को क्या हो गया है (फेस–बुक, वाहटसएप,ट्वीटर इन्सट्राग्राम के पन्ने खाली जा रहे हैं) यह सब देखकर मन यह सोचने पर विवश हो जाता है कि कहीं यह सब तूफान आने के पहले की शान्ति तो नहीं है?*

*यह सोचकर मन में तरह–तरह की शंकायें जन्म लेने लगती हैं और भय भी लगने लगता है, शंकाओं का जन्म लेना और भय का लगना इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्वाभाविक सी बात है क्योंकि जबसे हमने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कदम रखा है तबसे तरह–तरह के तूफानों का सामना करना पड़ा है, यह अलग बात है कि अभी तक कोई भी ऐसा तूफान नहीं आया जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाप्त करने में सक्षम रहा हो ! हाँ तकलीफें जरुर दी हैं, नये–नये विवादों को जन्म दिया है परन्तु यह हम ही थे जिन्होंने हर बार गिरकर उठना सीखा है, परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हों हमें परिस्थितियों की दिशा मोड़ना आता है लेकिन दिशायें मोड़ते–मोड़ते दिशाहीन होने का भय भी सताता रहता है, कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को सफल बनाने के लिये एक निश्चित दिशा का होना बहुत ही आवश्यक है आज के परिदृष्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में जबरदस्त कार्य की आवश्यकता है क्योंकि यही एक मात्र ऐसा रास्ता बचा है जिसपर चलते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित किया जा सकता है कुछ लोग काम करने के विषय पर तर्क देते हैं कि कार्य कैसे किया जाये ? ऐसे लोगों के लिये समझने के लिये यह एक आसान तरीका है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता ही उसकी सार्थकता को सिद्ध करती है हम लोग बात–बात पर एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति का उदाहरण देते हैं कि यह पद्धति कितनी कारगर है इसके डाक्टर कितने सम्पन्न होते हैं हर ओर मान सम्मान मिलता है यह सारी बातें कहने व सुनने में तो बहुत अच्छी लगती हैं परन्तु हकीकत में हम केवल सिक्के का एक ही पहलू देखते हैं और वह है सिक्के की चमक, हमको यहाँ पर यह भी सोचना चाहिये कि इस चमक को पाने के लिये कितना प्रयास और कष्ट झेला गया होगा !*

*जिस समय एलोपैथी स्थापित होने का प्रयास कर रही थी उस समय पूरे देश में आयुर्वेद का बोल–बाला था वैद्यों का सर्वत्र सम्मान था लेकिन एलोपैथ के समर्थकों ने इस कदर मेहनत की आयुर्वेद को ही दूसरे नम्बर पर ला दिया, ठीक इसी प्रकार हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि हम सब भी मिलकर कोई ऐसा कार्य करें जिससे कि किसी पद्धति को तो हमें किसी पायेदान पर खड़ा नहीं करना है लेकिन हम अपनी सार्थकता तो सिद्ध कर सकते हैं, हमारे सारे आन्दोलन और सारी गतिविधियां तभी सार्थक होंगी जब हमारा कार्य सर चढ़कर बोलेगा, सम्मान तो व्यक्ति का नहीं अपितु उसके द्वारा किये गये कार्यों का होता है, इसलिये हम सबका यह नैतिक दायित्व है कि हम सब मिलकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सार्थक सामूहिक ऐसे कार्य करें जिससे कि शीघ्र से शीघ्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त हो सके, रास्ते तो कभी बन्द नहीं होते ! हाँ ढूँढने वाला चाहिये !! एक कहावत भी है कि जहाँ चाह वहीं राह, हमें जल के प्रवाह से सीख लेनी चाहिये, जल के प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता अगर एक मार्ग अवरुद्ध किया जाता है तो दूसरी राह जल स्वयं ही बना लेता है, ठीक इसी प्रकार से हमारे पास भी कार्य करने के अनेकों अवसर हैं बस आवश्कता इस बात की है कि सही समय पर उन अवसरों को हम प्रयोग में ला सकें, शान्ति से बैठना, निराश होकर बैठना, या जो मिल गया उतना ही ठीक है या फिर क्या फायदा काम करने से आगे तो कुछ हो नहीं सकता इस प्रकार के निरर्थक विचारों को मन से त्याग कर एक नये उत्साह के साथ कार्य में लगना होगा।*

*सन्नाटा तोड़ने के लिये सपनों की दुनिया से निकलकर नींद से जागना आवश्यक है क्योंकि राज्य सरकार द्वारा एलोपैथी को छोड़कर सभी मान्यता प्राप्त व गैर मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के क्लीनिकों व चिकित्सालयों की सघन जाँच का अभियान चलाने का विचार रखती हैं।*

*बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयास भी सघन और बड़े करने पड़ते हैं, कार्य में खामोशी नहीं जोश के दर्शन होने चाहिये, तभी पूर्णता की प्राप्ति का झण्डा लहरा सकते हैं।*

# आन्दोलन निडरता से चलायें

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक आन्दोलन के रुप में माना जाता है और यह आन्दोलन पिछले डेढ़ सौ वर्षों से भारतवर्ष में चल रहा है, प्रारम्भ से लेकर आजतक इस आन्दोलन से बहुत से लोग जुड़े जिन्होंने संगठन बनाया और संगठन के माध्यम से आन्दोलन को गति प्रदान की सन् 1950 के आस–पास पूरे भारत में कुछ ही संगठन कार्य कर रहे थे जो पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कार्य किया करते थे, उन दिनों उत्तर प्रदेश, बंगाल और बिहार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के गढ़ हुआ करते थे और इन्हीं प्रान्तों से निकले हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथ पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन की अलख जलाते थे, चिकित्सा के माध्यम से, साहित्य के माध्यम से जनमानस तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी को पहुंचाने का प्रयास होता था, देश नया–नया आज़ाद हुआ था ज़्यादा कानूनी दांव–पेंच नहीं थे और लोग भी सीधे–सादे हुआ करते थे, ज़्यादा छल–कपट के दर्शन नहीं हुआ करते थे, ज़्यादा कानूनी बाध्यता न होने के कारण लोगों में भय भी नहीं था और लोग निडर होकर कार्य किया करते थे, धीरे–धीरे परिस्थितियां बदलीं कुछ नये और युवा लोग इस आन्दोलन से जुड़े उनके मन में यह विचार आया कि जब अन्य चिकित्सा पद्धतियां नियमित ढंग से चलाई जा रही हैं तो क्यों न इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को भी उसी ढंग से चलाया जाये ! प्रारम्भिक काल में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शिक्षण–प्रशिक्षण की कोई नियमित व्यवस्था नहीं थी जिसके कारण गुरु शिष्य परम्परा के आधार पर शिक्षण कार्यक्रम संचालित होते थे, परिवर्तन हुआ और शिक्षण व्यवस्था नियमित विद्यालय की व्यवस्था में बदल गयी इस विद्यालीय व्यवस्था में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन की दिशा ही बदल दी, लोग विद्यालय में मिलते थे परस्पर चर्चा होती थी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा ग्रहण करने वालों के मन में भी यह विचार कौंदता था कि इस चिकित्सा पद्धति को भी सरकारी मान्यता प्राप्त हो और इसी सरकारी मान्यता की चाहत ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन को गति दी घरनों प्रर्दशनों के माध्यम से सरकार को जागृत करने का प्रयास प्रारम्भ हुआ, धीरे–धीरे आन्दोलन पूरे देश में फैल गया तब सरकार का ध्यान गया, कुछ राज्य सरकारों ने इस आन्दोलन को दबाने के लिए कुछ उलटे सीधे शासनादेश भी किये जिनका डटकर मुकाबला किया गया बहुत मुकदमें लगे कुछ मुकदमों के परिणाम अच्छे आये और 1998 के एक मुकदमें ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर जैसा काम किया, 1998 के बाद 2003 फिर 5–5– 2010 एवं 21 जून, 2011 इसी आन्दोलन का परिणाम रहे हैं परन्तु वर्ष 2015 से जो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसने गति तो खूब पायी, आन्दोलन कारियों ने वाहवाही भी खूब लूटी परन्तु परिणाम के नाम पर पलड़ा भारी नहीं हो पाया, इसके पीछे एक कारण यह भी था कि जो लोग आन्दोलन चला रहे थे उनमें निडरता नहीं थी, पहला काम तो उन्होंने यह किया कि अपने आपको सुरक्षित करने के लिए दूसरी मान्यता प्राप्त पद्धतियों के शरण में चले गये और यहीं से आन्दोलन का क्षरण प्रारम्भ हो गया, आन्दोलन अभी भी चल रहा है परन्तु अब वही लोग टिकेंगे जो निडर होकर कार्य करेंगे, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को कई बार ऐसी परिस्थितियों से होकर गुज़रना पड़ा है, यदि 2003 को याद करें तो सब कुछ सामने आ जायेगा तेज़ी से चलते आन्दोलन को भारत सरकार द्वारा जारी 25 नवम्बर, 2003 के आदेश ने एक झटका दिया।

जब तक यह आदेश जारी नहीं हुआ था तब तक पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जय जय हो रही थी, खूब विद्यालय खुल रहे थे, छात्र भी खूब प्रवेश ले रहे थे और तो और शीर्ष संस्थाओं की संख्या भी दिन दूनी रात चौगुनी बाढ़ के पानी जैसी बढ़ रही थी, जो कल तक किसी विद्यालय में किसी सहायक के रूप में थे वे किसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था के मालिक बन गये थे और इसी अराजकता का परिणाम था जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को झटका लगा, जब भी कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास लिखा जायेगा तो ऐसे लोगों को सम्मिलित किया जायेगा या नहीं यह तो इतिहासकार पर निर्भर करेगा जब इतिहास की बात आती है तब मन यह सोचने के लिए विवश हो जाता है कि वास्तव में जो समर्पित लोग हैं या ऐसे चिकित्सक हैं जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सच्ची सेवा कर रहे हैं, क्या कोई इतिहासकार उन्हें स्थान देगा ! वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन जो लोग चला रहे हैं उन्हें इलेक्ट्रो होम्योपैथी से ज्यादा व्यक्तिगत चिन्ता है, कभी कभी तो ऐसा लगने लगता है कि यह आन्दोलन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए चलाया जा रहा है या निजी हितों की रक्षा के लिए ! या फिर इतिहास पुरूष बनने के लिए, सोशल मीडिया में किसी ने एक पोस्ट किया था कि फितरती व्यक्ति इतिहास बनाता और बुद्धिमान उस इतिहास को पढ़ता है एक बार तो लगता है कि यह बात सही है परन्तु दूसरे पल ही मन यह मानने को तैयार नहीं होता है क्योंकि इतिहास वही व्यक्ति बना सकता है जो ताकतवर होता है और आन्दोलन भी वही चलाता है जिसके पास धन–बल व जन–बल होता है, चाणक्य कितना भी बुद्धिमान क्यों न रहा हो परन्तु उनकी याद मात्र नीतियों के लिए की जाती है और जब शक्ति की बात होती है तो चन्द्रगुप्त ही आगे आते हैं, आज के युग में ऐसे लोग सिर्फ कल्पना में होते हैं लेकिन एक दम समाप्त हो जाये, ऐसा भी नहीं होता है,इलेक्ट्रो होम्योपैथी में किसी भी तरह के व्यक्ति क्यों न आ जायें परन्तु एक भी निडर व्यक्ति रहा तो आन्दोलन समाप्त नहीं होगा, 19 मार्च 2018 को भारत सरकार द्वारा जिस प्रकार से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता सम्बन्धी प्रकरण का पटाक्षेप किया गया है, उससे लोगों में हताशा है जो इस आन्दोलन से जुड़े हुए लोग थे वह एक दूसरे से मिलने में कतराने लगे और तो और दुनिया भर की बातें की जा रही थीं परन्तु देश का कोई भी संगठन 19 मार्च पर खुलकर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं था, इसके पीछे कारण क्या है यह न तो कोई रहस्य है और न ही कोई छिपा हुआ एजेण्डा, अपितु इसके पीछे वह स्थिति है जो गत दो वर्षों से लोगों की भावनाओं से खेला गया था, ऐसे ऐसे दावे लोगों द्वारा फेंके गये थे जिसका परिणाम यह हुआ कि आज एक दूसरे से बात नहीं कर पा रहे हैं कोई माने या न माने पर निश्चित रूप से यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को थोड़ा सा धक्का अवश्य दे गया, यद्यपि 19 मार्च, 2018 का प्रभाव इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन पर बिल्कुल नहीं पड़ा क्योंकि 21 जून, 2011 का आदेश आज भी मील के पत्थर की भांति खड़ा है परन्तु मान्यता का जो लालीपॉप दिखाया गया उसने हमारे साथियों के मन में हताशा का भाव भर दिया, इस आन्दोलन में पिछले आठ–नौ वर्षों से जिन नये लोगों ने ज्यादा सक्रीयता दिखायी उनके मन में पहले से ही यह भाव था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को हाल फिलहाल मान्यता नहीं मिलने वाली है, तभी तो एक तरफ यह लोग मान्यता की बड़ी बड़ी बातें करते रहे दूसरी तरफ अपने भविष्य को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सुरक्षित नहीं मान रहे थे इसलिए आते ही पहले इन लोगों ने अपने आप को किसी अन्य पद्धति के हवाले किया फिर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तरफ ध्यान दिया।

पूरे समाज को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भविष्य तलाशने की सलाह देने वाले खुद अपना भविष्य दूसरी पैथी में तलाश रहे थे, जो भी होना था वह हो गया कुछ व्यक्तियों के रहने या न रहने से न तो आन्दोलन बदलता है और न ही आन्दोलन की शक्ल, आज भी बहुत सारे ऐसे समर्पित इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं जो इस आन्दोलन को नये सिरे से और तेज़ धार देंगे तथा निश्चित रूप से आने वाले कुछ ही दिनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ दिशा अवश्य निर्धारित करा पाने में सक्षम होंगे परन्तु यह तभी सम्भव है जब हमारे सभी साथी पूरी क्षमता के साथ निडर होकर काम करें और दूसरों को भी प्रेरित करें, जो कल था वह आज नहीं है, जो आज है वह भी कल पुराना होगा परन्तु आन्दोलन निरन्तर चलता ही रहेगा।

# Electro Homoeopathic Medical Association of India

# E.H.M.A.I.

## IS ONLY

## NATIONAL ORGANIZATION

## of

## Electro Homoeopathy

## AS CERTIFIED BY

## GOVT. OF INDIA

**Ministry of Health & Family Welfare**

**Vide Order No C.30011/22/2010/HR**

**Dt. 21-06-2011**

Regarding Practice , Education & Research

Become a member yourself

&

Inspire others

E-mail ehmaik@gmail.com * *website www,behm,org.in

# जनपदीय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की बैठक सम्पन्न

रायबरेली– बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उत्तर प्रदेश के अधिकृत जिला इलेक्ट्रो होम्योपैथिक प्रभारी अधिकारी प्रदेश के हर जिले में कार्यरत है एवं क्षेत्रीय अधिकारी कर्यालय मण्डल में कार्यरत है। यदि आप इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे है तो प्रथम प्राथमिकता में सबसे पहले अपना जिला स्तर पर पंजीकरण कराये ज्ञातव्य हो कि जिला पंजीकरण का कोई शुल्क नहीं है। यह बात आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इंस्टीट्यूट जनपद रायबरेली के प्राचार्य डा0 पी0एन0 कुशवाहा ने एक चिकित्सकों की बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा डा0 कुशवाहा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को सावधान किया है कि जिला स्तर पर बिना पंजीकरण कराये चिकित्सा व्यवसाय करना अवैधानिक है जिला इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जिला प्रभारी डा0 रमेश कुमार द्विवेदी ने कहा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करने वाले जनपद के जो चिकित्सकों ने अभी तक पंजीकरण नही कराया है वो तत्काल अपना पंजीकरण करवा लें। बैठक में डा0 सत्यपाल वर्मा, त्रिलोक सिंह, राम आसरे, राजेन्द्र सिंह, रिन्कू, रामलखन, राजेन्द्र कुमार, रामचन्द्र, राकेश कुमार, मलखान, शोभनाथ, रमेश कुमार तिवारी, श्यामचरण, सन्त कुमार, राम प्रताप यादव, रामसजीवन, रामपाल, राजनारायण, राधेश्याम आदि उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता डा0 राजेन्द्र जी ने किया।

आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीटयूट, रायबरेली के प्राचार्य डा0 पी0एन0 कुशवाहा चिकित्सकों की बैठक को सम्बोधित करते हुये। छाया – गजट

आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीटयूट, रायबरेली के प्रांगण में उपस्थित जिले के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक

# नव मनोनीत संयोजकों की बैठक लखनऊ में सम्पन्न

लखनऊ– 13 नवम्बर, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 की नव मनोनीत कमेटियों के संयोजकों की बैठक बोर्ड के मुख्यालय 8 – लालबाग, लखनऊ में बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुयी, बैठक में लखीमपुर से डा0 आर0 के0 शर्मा, हमीरपुर से डा0 नरेन्द्र भूषण निगम, फतेहपुर से डा0 देवानन्द सागर एवं शाहजहाँपुर से डा0 आमिर बिन साबिर ने भाग लिया और अपने–अपने विचार रखे, मध्यांह भोजन के बाद बैठक की समाप्ति हुई।

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं निश्चलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।

बाये से दायें क्रमशः डा0 नरेन्द्र भूषण निगम, बोर्ड के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी, डा0 आर0 के0 शर्मा एवं डा0 देवानन्द सागर –छाया गजट